मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

मजदूर यूनियन का गठन 3
गडकरी की सड़क लूट 4
विघटनकारी राजनीति हावी 5
चौटाला खानदान में जूतमपैजार 8

वर्ष 31 अंक -42 फ़रीदाबाद 14-20 अक्टूबर 2018 फोन : - 9999595632 2.50 ₹

चुनाव 2019 : हरियाणा में सिंगल व लोकसभा में डबल डिजिट में सिमट जायेगी भाजपा

पीएम मोदी की रैली में जबरदस्त हूटिंग

हजारों नौजवानों ने 'मोदी- गो बैक' के नारे लगा कर भाषण में डाला व्यवधान

इधर मोदी का भाषण चलता रहा, उधर पीछे पंडाल खाली हो गया । पूरे प्रदेश से प्राइवेट स्कूलों की बसों में ढ़ो कर लाने के बाद भी भीड़ 15 हजार ही पहुंची। हरियाणा के तीन सांसद- केंद्रीय मंत्री राव इंद्र जीत सिंह, अश्विनी चोपड़ा व राजकुमार सैनी रैली से रहे नदारद।

सांपला, रोहतक (मजदूर मोर्चा ब्यूरो)

रहबरे-आजम व किसानों के मसीहा चौधरी छोटूराम की जयंती के मौके पर सांपला में आयोजित रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बुरी तरह हूटिंग हो गई। किसी प्रधानमंत्री की ऐसी हूटिंग पहले शायद ही कभी हुई हो।

पिछले चार साल के शासनकाल के दौरान प्रधानमंत्री मोदी की सार्वजनिक रूप से ऐसी छिछालेदारी देश में शायद कहीं भी नहीं हुई । मोदी जी का पूरा भाषण ही हूटिंग की भेंट चढ़ गया।

गौरतलब है कि मोदी जी का भाषण शुरू होने तक सब कुछ एकदम शांत था और भीड़ एकदम अनुशासनबद्ध तरीके से बैठी हुई थी।

मोदी जी के भाषण के लिए खड़े होते ही लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट और 'मोदी-मोदी' के नारों से उनका स्वागत किया। लग रहा था कि अभी भी हरियाणा में मोदी जी का जादू बरकरार है।

मोदी जी ने शुरूआत में 'सर छोटूराम, अमर रहें -अमर रहें' के नारे लगवाये जिसका लोगों ने खूब गर्मजोशी से जवाब दिया।

इसके बाद मोदी जी ने सर छोटूराम के गुणगान शुरू किये और किसानों की भलाई के लिए किए गये उनके कामों को गिनाने लगे। अचानक प्रेस गैलरी के पीछे से शोर शराबा सुनाई देने लगा, हजारों की तादाद में नौजवान दोनों हाथ हिला हिला कर कहने लगे, हमें नहीं सुनना आपका भाषण। बीजेपी नेता समझ नहीं पा रहे थे कि अचानक यह क्या झमेला शुरू हो गया ?

इन नौजवानों के शोर के कारण किसी को मोदी जी का भाषण पल्ले नहीं पड़ रहा था लेकिन मोदी जी ने भी हूटिंग से विचलित हुए बिना अपना भाषण जारी रखा।

उन्होंने न तो कोई राजनीतिक बातें हीं की और न किसी की आलोचना करने का प्रयास ही किया।

उनका पूरा भाषण सर छोटूराम, सरदार पटेल और किसानों की समस्याओं पर ही केंद्रित रहा। बीजेपी के कुछ नेताओं ने मोदी का विरोध कर रहे नौजवानों को शांत कराने का प्रयास किया लेकिन ये नौजवान पूरे समय खड़े ही रहे और समझाने का उन पर कोई असर नहीं हुआ।

उन्होंने कुर्सियों पर बैठने का उपक्रम तक नहीं किया, प्रेस गेलरी के पीछे मौजूद पुलिस कर्मी मूक दर्शक बने रहे और उन्होंने विरोध करने वालों को खदेड़ने का कोई प्रयास नहीं किया यदि नारेबाजी व हूटिंग करने वाले की तादाद कम होती तो पुलिस उन्हें दबोच भी लेती लेकिन हजारों लोगों की भीड़ को खदेड़ने के उपक्रम में हालात खराब होने का अंदेशा था। पंडाल में भगदड़ मचने की आशंका के चलते पुलिस शांत बनी रही।

अगर भगदड़ मच जाती तो बहुत लोगों की जानें जा सकती थीं। स्टेज और हूटिंग करने वालों के बीच में सिर्फ वीआईपीज , सरकारी अधिकारियों व प्रैस संवाददाताओं की गैलरियां ही थीं।

हूटिंग करने वालों के लगातार खड़े रहने और शोर मचाने के कारण पंडाल में पीछे बैठे लोगों को कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। इस वजह से पीछे की कुर्सियों पर बैठे लोग उठ कर पंडाल से बाहर जाने लगे। नतीजा यह हुआ कि मोदी जी का भाषण खत्म होने से पहले ही आधा पंडाल खाली हो चुका था।

मोदी जी के भाषण के खत्म हो जाने और उनके स्टेज से चले जाने के बाद भी कुछ देर तक ये हुड़दंगी नौजवान शोर मचाते रहे। वैसे भाषण देते समय मोदी जी के चेहरे के भाव लगातार रंग बदलते रहे हुडदंगी नोजवानों की भीड़ के शोर शराबे व नारेबाजी के कारण वे बैचेन जरूर दिखे लेकिन उन्होंने संयम बनाए रखा और हुडदंगियों को धमकाने या चेतावनी देने की कोई कोशिश नहीं की और अपना भाषण जारी रखा। लेकिन स्टेज पर बैठे मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर और केंद्रीय मंत्री बीरेंद्र सिंह की हालत देखने लायक थी। वे बेबसी से हाथ मलते रहे और कुछ नहीं कर सके, बीजेपी के तमाम आला नेताओं के चेहरे आज के इस नजारे को देख कर उतरे हुए नजर आये। परंतु कुछ ऐसे नेता भी थे जिनके चेहरे खिले हुए दिखाई दिए।

सबसे बुरी हालत पुलिस व गुप्तचर एजेंसियों के आला अधिकारियों की दिखाई दी जिनकी जिम्मेदारी हुड़दंगियों पर निगाह रखने की थी । गुप्तचर एजेंसियों के जासूसों को भनक तक नहीं लगी और हजारों की तादाद में हुडदंगी स्टेज के इतने करीब तक पहुंच गये।

अगले एकाध दिन मे रोहतक जिले के बड़े अधिकारियों तथा गुप्तचर एजेंसियों के अफसरों पर आज के घटनाक्रम को लेकर गाज गिरने की पूरी संभावना है।

प्रधानमंत्री के कार्यक्रम में इतनी बड़ी तादाद में हुडदंगियों का निर्विघ्न पहुंचना सुरक्षा की दृष्टि से एक बड़ी चूक है।

लगता है कि राज्य सरकार को रैली में कम भीड़ आने की संभावना पहले से ही दिखाई दे गई थी इसलिए रैली के लिए बहुत छोटा पंडाल लगाया गया था।

पंडाल में बैठने के लिए सभी के हेतू कुर्सियों की व्यवस्था की गई थी। कुर्सियों की संख्या और पंडाल के क्षेत्रफल के हिसाब से इस पंडाल में बीस हजार से ज्यादा भीड़ नहीं जुट सकती। परंतु पंडाल से बाहर भी तकरीबन पांचेक हजार लोग मौजूद थे।

इस हिसाब से पच्चीस से तीस हजार की भीड़ रैली में आई थी जो कि मोदी जी के कद के हिसाब से बहुत कम है और भीड़ के हिसाब से रैली फ्लॉप कही जा सकती है। ये भीड़ भी प्राइवेट स्कूलों की सैंकड़ों बसों को कब्जे में लेकर ढ़ोई गई थी। पूरे प्रदेश भर से लोगों को ढ़ो कर लाया गया था। खुद मोदी जी ने अपने भाषण के अंत में कहा कि पंजाब, हरियाणा व राजस्थान से आये सभी लोगों का रैली में आने के लिए धन्यवाद।

यानी मोदी जी भी मानते हैं कि ये भीड़ तीन राज्यों की थी वैसे दिल्ली की बसें भी भीड़ लेकर रैली में आई हुईं दिखीं। वैसे प्रधानमंत्री के साथ बैठने का मौका सिर्फ चंद लोगो को ही मिल पाया जिनमे केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेंद्र सिंह व कृष्ण पाल गुर्जर, मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, हरियाणा के कृषि मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत और जम्मू काश्मीर के राज्पाल सतपाल मलिक ही मंच पर विराजमान हो सके। हरियाणा सरकार के बाकी सभी मंत्रियों व विधायकों को एक अलग मंच पर बैठाया गया।

***हरियाणा के वित्त मंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने भी पीएम के मंच पर चढ़ने की कोशिश की थी लेकिन एसपीजी के कमांडोज ने उन्हें हाथ पकड़ कर पीछे कर कर दिया और स्टेज पर न चढ़ने दिया* वैसे हरियाणा बीजेपी के तीन लोकसभा सदस्यों की आज की रैली में गैरमौजूदगी चर्चा का विषय बनी रही।**

डूबते जहाज हैं ट्रम्प और मोदी

मजदूर मोर्चा विशेष रिपोर्ट

क्या राष्ट्रपति ट्रम्प और प्रधानमन्त्री मोदी, जिनके एक जैसे नस्ली राष्ट्रवादी प्रशंसक हैं, अभी से डूबते हुए जहाज कहे जायेंगे ? अमेरिका में ट्रम्प के दर्जन भर करीबी सहयोगी डेढ़ साल में ही उनका प्रशासन छोड़ गये। इनमें से अधिकतर ने कड़वाहट और अपमान भरे वातावरण में विदा ली। एक को सजा हो चुकी है जबकि कुछ अन्य इसी रास्ते पर हैं। स्वयं उनका चुनाव प्रमुख और दशकों का विश्वासपात्र मैनाफोर्ट उनके विरुद्ध वायदा माफ गवाह बन गया है।

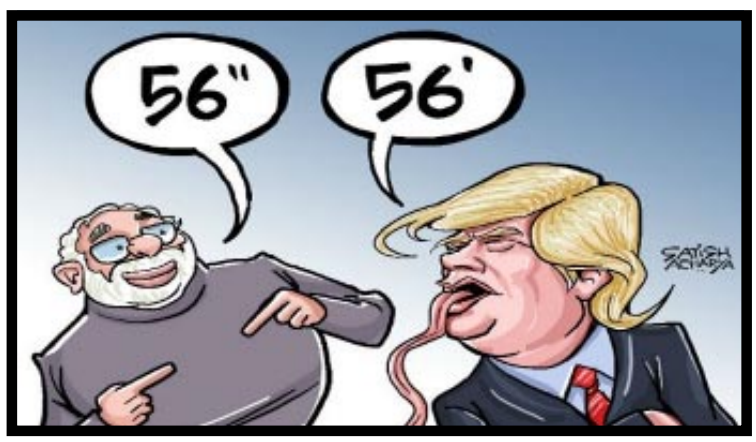

जबकि मोदी के भी आधा दर्जन कॉर्पोरेट चहेते उनका काफी शासन शेष रहते भी भारत से माल-असबाब सहित निकल लिए। इन भगोड़ों के पीछे कानून और प्रवर्तन की तमाम एजेंसियां पड़ी हुयी हैं। यहाँ तक कि आरोपों से घिरी राफेल डील के भागीदार अनिल अम्बानी के भी देश छोड़ कर भागने की आशंका सुप्रीम कोर्ट तक पहुँच गयी। मोदी सरकार के, खूब ढोल बजाकर विदेशों से बुलाये गये कई आर्थिक सलाहकार भी एक-एक कर छू मंतर हो रहे हैं।

एक समझ यह बनी है कि ट्रम्प और मोदी ने अपने जैसे स्तर के करीबी ही तो चुने होंगे। यानी उनसे और क्या उम्मीद की जा सकती है! दूसरे, जो उत्कृष्ट स्तर के सहयोगी इन्हें विरासत में मिले भी उनसे इनकी वैसे भी नहीं निभ सकती थी। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एफबीआई के सम्मानित डायरेक्टर कोमी को ट्रम्प ने और भारत में रिजर्व बैंक के नामी गवर्नर राजन को मोदी ने इसी लिए चलता किया।

ट्रम्प का श्वेत रिपब्लिकन जज, ब्रेट शेष पेज दो पर